राजस्थान : वीरों की माटी

अंजु चौधरी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की।

राजस्थान की धरा पर फिर हुई है भोर
वीरों की माटी की खुशबू फैल रही चहुँ ओर
सूरज का घोर ताप सह–सह कर जो बड़े हुए हैं
पथ के दोनों ओर बबूल कीकर वो खड़े हुए हैं
भू–जल से सिचिंत खेती का है जोर
वीरों की माटी की खुशबू फैल रही चहुँ ओर
राजस्थान की धरा पर फिर हुई है भोर
वीरों की माटी की खुशबू फैल रही चहुँ ओर
अस्ताचल को जा रहा दिवाकर समेट अपनी आभा
रेत के सागर की उसने कंचन कर दी काया
बंजर धरती पर मस्त मगन नाच रहे हैं मोर
वीरों की माटी की खुशबू महक रही चहुँ ओर
राजस्थान की धरा पर फिर हुई है भोर
वीरों की माटी की खुशबू फैल रही चहुँ ओर
जयपुर है शहर गुलाबी उदयपुर बना झीलों की रानी
जोधपुर का रंग पीला जैसलमेर ने सुनहरी चादर तानी
मरूस्थल का मौन मचा रहा मन में शोर
वीरों की माटी की खुशबू महक रही चहुँ ओर
राजस्थान की धरा पर फिर हुई है भोर
वीरों की माटी की खुशबू फैल रही चहुँ ओर
कहीं कालबेलिया, कहीं झूमर से सजी पड़ी है रात
चटक रंगों के सजे हुए हैं नर नारी के गात
सब जन हिल–मिल मना रहे गणगौर
वीरों की माटी की खुशबू महक रही चहुँ ओर
राजस्थान की धरा पर फिर हुई है भोर
वीरों की माटी की खुशबू फैल रही चहुँ ओर